Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 1

– Save This Page as a PDF–

प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं

मती ६:९-१३ और लूका ११:१-१३

खुदाई: इस समय तालमिडीम को प्रार्थना के बारे में पूछने के लिए क्या प्रेरित करता है? येशुआ की आदर्श प्रार्थना में, अडोनाई से संबंधित कौन सी दो चिंताएँ सबसे पहले आती हैं? क्यों? फिर कौन सी व्यक्तिगत चिंताएँ उत्पन्न होती हैं? प्रार्थना और क्षमा कैसे संबंधित हैं? रोटी की ज़रूरत वाले मित्र के यीशु के दृष्टांत में, दो मित्र किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? प्रार्थना में दृढ़ता क्यों महत्वपूर्ण है? वचन ९-१० दृष्टांत से कैसे संबंधित हैं? इन पदों को कैसे गलत समझा जा सकता है? वचन ११-१३ वचन ९-१० के आशय को कैसे स्पष्ट करते हैं? यह आपको परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या सिखाता है? उसकी अच्छाई?

चिंतन: यह प्रार्थना किस प्रकार हमारे अनुसरण के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करती है? एक ही प्रार्थना को बार-बार पढ़ने के क्या खतरे हैं? अपनी प्रार्थनाओं को ईमानदार और सार्थक बनाए रखने के लिए हम क्या कदम उठा सकते हैं? किन परिस्थितियों में प्रार्थना करना छोड़ देना आकर्षक है? लगातार प्रार्थना से क्या हासिल हो सकता है? यह परिच्छेद किस प्रकार आपके जीवन में दीर्घकालिक प्रार्थना अनुरोध या आवश्यकता के प्रति आपके दृष्टिकोण को बदलता है?



दानिय्येल ने दिन में तीन बार प्रार्थना करके
जो उदाहरण स्थापित किया (दानिय्येल ६:१०) फरीसियों द्वारा धार्मिक रूप से उसका पालन किया गया। उन्होंने मनुष्यों के सामने अपनी धर्मपरायणता प्रदर्शित करने के साधन के रूप में प्रार्थना का उपयोग किया (देखें Ii – फरीसी और कर संग्रहकर्ता का दृष्टान्त)। बप्तिजक युहन्ना के शिष्यों ने स्पष्ट रूप से महसूस किया था कि ऐसी प्रार्थना अस्वीकार्य थी और उन्होंने उनसे उन्हें प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहा था। इसलिए, योचनान ने प्रार्थना में विकृत फरीसी प्रथाओं को सही करने की

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 2

मांग की थी। एक दिन यीशु एक निश्चित स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे। जब उसने समाप्त किया, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, “हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखादीजिये, जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपने चेलों को सिखाया” (लूका ११:१)।

मसीहा के दिनों में, प्रत्येक रब्बी की प्रार्थना करने की अपनी अनूठी शैली थी। और यदि उस रब्बी के कोई अनुयायी या शिष्य होते, तो वह उन्हें भी उसी प्रकार प्रार्थना करना सिखाता। ताकि सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करते समय, कोई किसी रब्बी के शिष्य को ज़ोर से प्रार्थना करते हुए सुन सके, तो वह अपने रब्बी को पहचानने में सक्षम हो सके। नतीजतन, येशुआ के प्रेरित चाहते थे कि वह उन्हें प्रार्थना करने की अपनी अनूठी शैली सिखाए।

फिर हमें प्रार्थना का एक सुंदर उदाहरण दिया जाता है जिसे “प्रभु की प्रार्थना” के रूप में जाना जाता है, क्योंकि प्रभु यीशु ने इसे सिखाया था, लेकिन इसे अधिक सटीक रूप से “शिष्यों की प्रार्थना” के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह कितनी विडम्बना है कि कुछ समूहों ने इस आदर्श प्रार्थना का उपयोग उसी तरह किया है जिसके विरुद्ध मसीहा ने चेतावनी दी थी – व्यर्थ पुनरावृत्ति! इसका मतलब कोई जादुई मंत्र नहीं है, बल्कि यह प्रार्थना करने के तरीके का एक मॉडल है। प्रभु की प्रार्थना का यह संस्करण मती की तुलना में संक्षिप्त है, लेकिन इसमें प्रार्थना के लिए समान विषय शामिल हैं। मैंने पूरी समझ के लिए दोनों को शामिल किया है।

तो फिर, आपको इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए (मत्तीयाहु ६:९ए)। इसके सभी घटक मसीहा के समय के यहूदी धर्म में पाए जा सकते हैं, और यह अपनी सुंदरता और शब्दों की मितव्ययिता के लिए पूजनीय है। तो फिर, जब हम प्रार्थना करते हैं तो यह एक आदर्श है। यह हमें प्रभावी आराधना के लिए वांछित महत्वपूर्ण विषयों और सिद्धांतों को दिखाता है:

१. हे हमारे स्वर्गीय पिता या अविनु शेबाशामायिम(मती ६:९बी; लूका ११:२ए), कई हिब्रू प्रार्थनाएँ खोलते हैं। अडोनाई के एक प्यारे पिता होने की अवधारणा यहूदी धर्म में कोई नई अवधारणा नहीं है। निर्गमन ४:२२ में इस्राएल को उसका पहलौठा पुत्र कहा गया, और यशायाह ने उसकी पीढ़ी के लिए घोषणा की: आप हमारे पिता हैं (यशायाह ६३:१६)। इसके अलावा, सिद्दुर में कई प्रार्थनाएँ परमेश्वर को अविनु के रूप में भी संबोधित करती हैं। नतीजतन, हमारी प्रार्थना, रुआच हा-कोडेश (पवित्र आत्मा) की शक्ति से, पुत्र के मंत्रालय के माध्यम से, पिता को संबोधित की जानी चाहिए (इफिसियों २:१८ देखें)। हमारे पिता, इस्राएल के परमेश्वर, अभी भी हमारी प्रार्थनाओं का केंद्र बिंदु हैं। मती की अगली दो पंक्तियाँ आराधनालय प्रार्थना के पहले भाग को याद दिलाती हैं जिसे कदीश के नाम से जाना जाता है।

२. आपका नाम पवित्र माना जाए (मत्तीयाहू ६:९सी; लूका ११:२बी)। आराधनालय में

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 3

सुप्रसिद्ध कदीश का पाठ करते समय, नेता इन शब्दों के साथ शुरुआत करता है, “उसके महान नाम को बढ़ाया और पवित्र किया जाए” या यितगदल व्यित्कादश। तल्मूड का एक संपूर्ण ट्रैक्टेट प्रार्थना और आशीर्वाद (ट्रैक्टेट बेराखोट) कैसे अर्पित किया जाए, इसके विवरण से संबंधित है। सामान्य सूत्र आज भी जारी है: बारुख अता अडोनाई (धन्य हैं आप, प्रभु), हमें अन्य प्रार्थनाओं से पहले हाशेम को आशीर्वाद देने की याद दिलाते हैं। परमेश्वर के नाम का आदर करना उसका आदर करना है। मिस्रवासियों के कई अलग-अलग नामों से कई देवता थे। मूसा उसका नाम जानना चाहता था ताकि यहूदी लोगों को ठीक-ठीक पता चल जाए कि उसे उनके पास किसने भेजा है (निर्गमन पर मेरी टिप्पणी देखें At– मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है)। एडोनाई ने स्वयं को मैं हूँ कहा, एक ऐसा नाम जो उनकी अपार शक्ति और अपरिवर्तनीय चरित्र का वर्णन करता है। उनका नाम उनके वादों की हस्ताक्षरित गारंटी की तरह है। ऐसी दुनिया में जहां मूल्य, नैतिकता और कानून लगातार बदलते रहते हैं, हम अपने अपरिवर्तनीय ईश्वर में स्थिरता और सुरक्षा पा सकते हैं। जो यहोवा मूसा को दिखाई दिया वही परमेश्वर है जो आज हम में वास कर सकता है। इब्रानियों १३:८ कहता है: यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है। क्योंकि हाशेम की प्रकृति स्थिर और भरोसेमंद है, हम उसका पता लगाने की कोशिश में अपना समय बर्बाद करने के बजाय उसका अनुसरण करने और उसका आनंद लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

3. आपका राज्य आये (लूका ११:२c), आपकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है (मती ६:१०)। यीशु ने अपने शिष्यों को आने वाले मसीहा साम्राज्य पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश दिया। हमें प्रार्थना करनी है कि हमारे जीवनकाल में ही पृथ्वी पर यही साम्राज्य स्थापित हो जाए। ग्रेट कद्दीश को जारी रखते हुए, नेता आगे कहते हैं, “। . . संसार में जिसे वह नये सिरे से रचेगा, जब वह मरे हुओं को जिलाएगा, और उन्हें अनन्त जीवन देगा, यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण करेगा, और उसके बीच में अपना मन्दिर स्थापित करेगा; और पृथ्वी से सभी बुतपरस्त आराधना को उखाड़ फेंकेगा, और सच्चे ईश्वर की आराधना को बहाल करेगा।” तोरा सेवा की धर्मविधि भी इस पर विस्तार से बताती है और प्रथम इतिहास २९:११-१२ को उद्धृत करती है जब यह कहती है, “राज्य तुम्हारा है, अडोनाई।” सभी सच्चे विश्वासी चाहते हैं कि ईश्वर का मसीहा राज्य इस धरती पर आए क्योंकि इसका मतलब है कि येशुआ हा-मशियाच वापस आ गया होगा। जब वह यरूशलेम से शासन करेगा और शासन करेगा (यशायाह Jg पर मेरी टिप्पणी देखें – धार्मिकता में आप स्थापित हो जाएंगे, आतंक दूर हो जाएगा), उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जाएगी क्योंकि यह वर्तमान में स्वर्ग में है।

४. हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे (मत्तीयाहु ६:११; लूका ११:३)। जबकि हमारे लिए मसीहा साम्राज्य की बड़ी तस्वीर के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है, मसीह हमें यह भी याद दिलाते हैं कि पिता हमारी दैनिक जरूरतों के बारे में भी चिंतित हैं। यह हमें याद दिलाता है कि चालीस वर्षों तक पिता ने अपने बच्चों की व्यावहारिक जरूरतों का ख्याल रखा। उदाहरण के लिए, मन्ना केवल उसी दिन खाने योग्य था जिस दिन

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 4

इसे दिया गया था। इस्राएलियों ने भविष्य के बारे में बहुत अधिक चिंता किए बिना अपनी दैनिक रोटी के लिए प्रभु को धन्यवाद देना सीखा। जब हम भोजन से पहले प्रार्थना करते हैं, तो हमें यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि हम भोजन को आशीर्वाद नहीं दे रहे हैं, बल्कि अपना भोजन उपलब्ध कराने के लिए यहोवा को आशीर्वाद दे रहे हैं!

५. जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही हमारे अपराधों को क्षमा करें (मती ६:१२ सीजेबी; लूका ११:४ए)। मसीह की प्रार्थना हमें क्षमा मांगने का एक मजबूत कारण देती है। चूँकि हमने भी उन लोगों को माफ कर दिया है जिन्होंने हमारे साथ अन्याय किया है, हम भी उसी तरह की माफी मांग सकते हैं। कभी-कभी क्षमा पाने के लिए क्षमा करना आवश्यक होता है; कभी-कभी क्षमा करना आवश्यक होता है क्योंकि हमें पहले ही क्षमा किया जा चुका है, और कभी-कभी क्षमा करना आवश्यक होता है क्योंकि हम दूसरों द्वारा क्षमा किए जाने की प्रक्रिया में होते हैं। क्षमा देने और प्राप्त करने के ये सिद्धांत यहूदी धर्म में आम हैं।

प्रत्येक शबात पर, जो लोग इब्राहीम, इसहाक और याकूब के ईश्वर से प्रेम करते हैं, वे अमिदा का छठा आशीर्वाद, स्थायी प्रार्थना पढ़ते हैं, जो यहूदी धर्मविधि की केंद्रीय प्रार्थना है। यह सभी पापों के लिए क्षमा मांगता है और क्षमा के प्रभु के रूप में ईश्वर की स्तुति करता है। यह प्रार्थना, दूसरों के बीच, मसीहाई यहूदियों के लिए सिद्दूर में पाई जाती है। पारंपरिक यहूदी धर्म की केंद्रीय प्रार्थना के रूप में, अमिदा को अक्सर रब्बी साहित्य में तेफिला, “प्रार्थना” के रूप में नामित किया जाता है।

क्षमा की अवधारणा रोश हशनाह और योम किप्पुर के उच्च पवित्र दिनों का केंद्रीय विषय है। अविनु मल्केनु प्रार्थना हमें दूसरों को क्षमा करने के साथ-साथ क्षमा प्राप्त करने के लिए भी बुलाती है। हमें याद रखना चाहिए कि क्षमा केवल उन चीजों को भूलने से कहीं अधिक है जो हमने गलत किए हैं, या इस तथ्य को कि हमारे साथ अन्याय हुआ है। इसका आदर्श उदाहरण हमारे प्रति येशुआ के कार्य हैं। वह हमारे पापों को नहीं भूलता है, लेकिन एक बार जब हम उसके परिवार में अपना लिए जाते हैं तो वह उन पर ध्यान नहीं देना चाहता है (देखें Bw – विश्वास के क्षण में प्रभु हमारे लिए क्या करता है)। उसी तरह, उसकी संतान के रूप में, दूसरों के प्रति हमारी क्षमा सशर्त नहीं हो सकती। इसे रोश हशनाह (यहूदी नव वर्ष का पहला दिन) पर होने वाले एक विशेष समारोह में प्रदर्शित किया जाता है। पारंपरिक यहूदी किसी झील या समुद्र के पास जाते हैं और उसमें रोटी के टुकड़े या पत्थर फेंकते हैं। मीका ७:१९ सीजेबी के आधार पर इस समारोह को तश्लिख, या आप फेंक देंगे कहा जाता है, जहां पैगंबर कहते हैं: आप उनके सभी पापों को समुद्र की गहराई में फेंक देंगे। यदि ईश्वर ने हमारे पापों को समुद्र की गहराई में दबा दिया है, तो अच्छा होगा कि हम उन्हें वहीं रहने दें और मछली पकड़ने न जाएँ!

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 5

प्रभु हमें तुरन्त क्षमा कर देता है (यशायाह ५५:७; प्रथम यूहन्ना १:९)। तो मुझे कब तक दोषी महसूस करना चाहिए? बहुत लंबा नहीं! वह मुझे बार-बार क्षमा करता है (नहेमायाह ९:१७; इब्रानियों ७:२५)। प्रभु ने मुझे स्वतंत्र रूप से क्षमा किया (रोमियों ३:२३-२४; इफिसियों २:८-९)। यह एक उपहार है। मैं इसके लिए भुगतान नहीं कर सकता। परमेश्वर ने मुझे पूरी तरह से माफ कर दिया है (कुलुस्सियों १:१४, २:१३-१४; रोमियों ३:२५; मत्ती २६:२८)। भजन ५१:१-१९ राजा डेविड द्वारा अपने जीवन में एक विशेष रूप से पापपूर्ण घटना के बाद यहोवा के समक्ष लिखित स्वीकारोक्ति थी। दाऊद को बतशेबा के साथ अपने व्यभिचार और इसे छुपाने के लिए उसके पति ऊरिय्याह की हत्या करने पर सचमुच खेद था (दूसरा शमूएल ११:१-२७)। वह जानता था कि उसके कार्यों से कई लोगों को ठेस पहुंची है। परन्तु चूँकि दाऊद ने उन पापों से पश्चाताप किया, इसलिए प्रभु ने दया करके उसे क्षमा कर दिया। उद्धार के लिए स्वयं परमेश्वर पवित्र आत्मा की अस्वीकृति को छोड़कर कोई भी पाप इतना बड़ा नहीं है कि उसे माफ नहीं किया जा सके! क्या आपको लगता है कि आप कभी भी प्रभु के करीब नहीं आ सकते क्योंकि आपने कुछ भयानक काम किया है? वह आपके किसी भी पाप को क्षमा कर सकता है और क्षमा करेगा।

६. और हमें परीक्षा में न ले आओ (मत्ती ६:१३क; लूका ११:४ख)। प्रलोभन शब्द से पहले कोई निश्चित उपवाक्य नहीं है। हालाँकि संज्ञा को निश्चित बनाने के लिए पूर्वसर्गीय वाक्यांश में लेख आवश्यक नहीं है, फिर भी यहाँ इसका लोप महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि इस शब्द का उपयोग आंतरिक प्रलोभनों को संदर्भित करने के लिए अधिक सामान्य अर्थ में किया जाता है। यीशु ने कहा: इस दुनिया में तुम्हें परेशानी होगी (योचनान १६:३३ बी), और इसमें कई मोड़ और मोड़ हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी परीक्षा ली जाएगी, फिर भी हमारे लिए यह प्रार्थना करना उचित है कि पिता हमें कठिन परीक्षा में न ले जाएँ (ग्रीक में प्रलोभन का अर्थ परीक्षा भी हो सकता है)। प्रभु किसी को पाप करने के लिए प्रलोभित नहीं करता (याकूब १:१३)। यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होगा। और हमारी इच्छाशक्ति को अतिरंजित किया गया है। हमारा पापी स्वभाव हमें जितना हम जाना चाहते हैं उससे कहीं आगे ले जाएगा और जितना हम चुकाना चाहेंगे उससे अधिक कीमत हमें चुकानी पड़ेगी। फिर भी, हमें प्रार्थना करने के लिए कहा जाता है कि हम कठिन परीक्षण न सहें, चाहे स्रोत कोई भी हो।

यीशु द्वारा कही गई प्रार्थना यहूदी रब्बी द्वारा सोची गई किसी भी प्रार्थना से बढ़कर थी। हमने जो गलत किया है उसे क्षमा करें, और हमें प्रलोभन में न डालें और रब्बियों की प्रार्थनाओं में कोई वास्तविक समकक्ष न खोजें। मंदिर में, लोगों ने कभी भी प्रार्थनाओं का जवाब “आमीन” के साथ नहीं दिया, बल्कि हमेशा इस आशीर्वाद के साथ दिया, “उनके राज्य की महिमा का नाम हमेशा के लिए धन्य हो!” रब्बी सिखाते हैं कि इसका पता कुलपिता जैकब से उनकी मृत्यु शय्या पर चला था। राज्य के संबंध में रब्बियों ने जो भी समझा हो, भावना इतनी प्रबल थी कि उनके द्वारा कहा गया था:

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 6

कोई भी प्रार्थना जिसमें राज्य का कोई उल्लेख नहीं है, वह बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं है।

७. परन्तु हमें उस बुराई से बचाए रखे (मत्तीयाहू ६:१३बी सीजेबी)। हमारे अपने शरीर के अलावा, येशुआ प्रलोभन के एक और स्रोत का उल्लेख करता है, जो दुष्ट या शैतान है, जो जीवित और स्वस्थ है, किसी भी संदेहहीन आत्मा को निगलने की कोशिश कर रहा है (अय्यूब १:६-७; जकर्याह ३:१; पहला पतरस ५:८)। हमारी आत्माओं के लिए इस महान आध्यात्मिक युद्ध के बीच, प्रार्थना का यह भाग हमें प्रार्थना करने की याद दिलाता है कि प्रभु हमें सुरक्षित रखें। पिता ने हमें अपनी देखभाल के लिए अनाथों के रूप में नहीं छोड़ा है, बल्कि हमारी सुरक्षा के लिए शक्तिशाली आध्यात्मिक कवच प्रदान किया है। जैसे-जैसे हम इस जीवन में आगे बढ़ते हैं, हमारे चारों ओर युद्ध छिड़ जाता है। परिणामस्वरूप, हमें उद्धार का टोप धारण करना चाहिए, धार्मिकता का कवच पहनना चाहिए, और आत्मा की तलवार चलानी चाहिए, जो परमेश्वर का वचन है (इफिसियों ६:१०-१८)। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह लड़ाई तीव्र है; हालाँकि, हमें जीत का वादा किया गया है क्योंकि जो आप में है वह उससे जो दुनिया में है उससे बड़ा है (प्रथम यूहन्ना ४:४ सीजेबी)।

सबसे पुरानी और सबसे विश्वसनीय पांडुलिपियों में ये शब्द शामिल नहीं हैं, “क्योंकि राज्य और शक्ति और महिमा सदैव तुम्हारी रहेगी,” इसलिए मैंने उन्हें यहां शामिल नहीं किया है। बहुवचन वाक्यांश। । । हमें दें । । । हमें माफ कर दो । । । हमारा नेतृत्व करें । । । हमें रखो । । । विशिष्ट रूप से यहूदी है, अलग-थलग व्यक्ति के बजाय समूह पर ध्यान केंद्रित करता है। वह हमें किस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करता है? राजा दाऊद ने कहा, यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है, मैं उसी का आश्रय लेता हूं। वह मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, और मेरा दृढ़ गढ़ है (भजन १८:२)। अपने लोगों के लिए प्रभु की सुरक्षा असीमित है और यह कई रूप ले सकती है। उन्होंने पाँच सैन्य शब्दों के साथ प्रभु की देखभाल का वर्णन किया। हाशेम (१) एक चट्टान की तरह है जिसे कोई भी हिला नहीं सकता जो हमें नुकसान पहुंचाएगा; (२) एक किला या सुरक्षा स्थान जहां दुश्मन हमारा पीछा नहीं कर सकता; (३) एक ढाल जो हमारे बीच आती है ताकि कोई हमें नष्ट न कर सके; (४) उद्धार का सींग, या शक्ति और शक्ति का प्रतीक; और (५) हमारे शत्रुओं से ऊँचा एक गढ़। यदि आपको सुरक्षा की आवश्यकता है, तो यीशु मसीह की ओर देखें।

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 7

तब यीशु ने उन से कहा, मान लो कि तुम्हारा कोई
मित्र है, और तुम आधी रात को उसके पास जाते हो (लूका ११:५अ)। निकट पूर्व में अत्यधिक गर्मी के कारण रात में यात्रा करने की आवश्यकता सामान्य ज्ञान है। लेकिन फ़िलिस्तीन में यह आवश्यक नहीं है क्योंकि तट के किनारे समुद्र से हवा आती है। अत: आधी रात को अतिथि का आगमन अप्रत्याशित होगा। और कहो, हे मित्र, मुझे तीन रोटियां उधार दे दो (लूका ११:५बी)। भोजन के दौरान, हर किसी के पास अपनी-अपनी रोटी होती है। वे काटने के आकार के टुकड़ों को तोड़ते हैं और इसे आम पकवान में डुबोते हैं, जो कभी भी अपवित्र नहीं होता है क्योंकि वे प्रत्येक टुकड़े की शुरुआत रोटी के ताजा टुकड़े से करते हैं।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि अतिथि पूरे समुदाय का अतिथि होता है, न कि केवल एक व्यक्ति का। अतिथि को पूरे गाँव के आतिथ्य का अच्छा अनुभव लेकर जाना चाहिए। मेरा एक मित्र यात्रा पर मेरे पास आया है, और मेरे पास उसे देने के लिये भोजन नहीं है (लूका ११:६)। जिसका वास्तव में अर्थ है, “मेरे पास अपने अतिथि की सेवा करने के लिए पर्याप्त कुछ भी नहीं है जिससे कि गाँव का सम्मान बरकरार रहे।” इस बात को ध्यान में रखते ही अगला वचन बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। पद ५ से ७ एक साथ विस्तारित प्रश्न हैं जो मूल ग्रीक पाठ में एक सशक्त नकारात्मक उत्तर की अपेक्षा करते हैं। यह समझ इस दृष्टांत की व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है।

और मान लीजिए कि अंदर वाला उत्तर देता है, “मुझे परेशान मत करो। दरवाज़ा पहले से ही बंद है, और मैं और मेरे बच्चे बिस्तर पर हैं। मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता” (लूका ११:७)। यह ऐसा है मानो येशुआ पूछ रहा हो, “क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप किसी मित्र के मनोरंजन में मदद करने के पवित्र अनुरोध के साथ पड़ोसी के पास जा रहे हैं और फिर वह सोते हुए बच्चों और बंद दरवाजे के बारे में हास्यास्पद बहाने पेश करता है?” ओरिएंटल श्रोता (या पाठक) अतिथि के लिए सामुदायिक जिम्मेदारी को समझेंगे और जवाब देंगे, “नहीं, मैं इसकी कल्पना नहीं कर सकता।”

मैं तुमसे कहता हूं, भले ही दोस्त दोस्ती के कारण उठकर तुम्हें रोटी नहीं देगा, फिर भी तुम्हारी चुटपाह के कारण, जिसका अर्थ है बेशर्म दुस्साहस, साहस, पित्त, बेशर्म तंत्रिका, दृढ़ता और सिर्फ सादा साहस, और शर्मिंदा होने से बचना , वह अवश्य उठेगा और तुम्हें जितनी आवश्यकता हो उतनी देगा (लूका ११:८)। इसलिए

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 8

[उधारकर्ता] तब तक दरवाजा खटखटाता रहता है जब तक कि उसका दोस्त दरवाजा नहीं खोल देता। मित्र जानता है कि [उधारकर्ता] को अपने विभिन्न पड़ोसियों से भोजन के लिए सभी आवश्यक चीजें एकत्र करनी होंगी। यदि मित्र ने रोटी जैसी विनम्र वस्तु के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया तो [उधारकर्ता] रोटी की तलाश में चक्कर लगाता रहेगा और मित्र की कंजूसी को कोसता रहेगा जो गाँव के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए भी नहीं उठेगा। सुबह तक पूरे गांव में कहानी फैल जाएगी। वह मित्र जहां भी जाता, उसे “शर्मिंदगी” के रोने का सामना करना पड़ता। “शर्मिंदगी से बचने” की अपनी इच्छा के कारण वह उठेगा और [उधारकर्ता] को जो चाहे देगा।

मध्यरात्रि में मित्र के दृष्टांत का एक मुख्य बिंदु यह है कि अपने सम्मान की रक्षा के लिए, मित्र [उधारकर्ता] अनुरोध और बहुत कुछ स्वीकार करेगा। इस प्रकार, यहोवा से पहले के विश्वासियों के पास यह भरोसा करने का बहुत अधिक कारण है कि उनके अनुरोध स्वीकार किए जाएंगे।

इसके बाद ईसा मसीह दृष्टांत से उपदेश की ओर मुड़ गए और कथा को लागू किया। यीशु ने प्रार्थना पर अपने पाठ का समापन तीन गुना उपदेश, तीन गुना वादा और अनुभव के आधार पर एक तीन गुना चित्रण के साथ किया। इसलिये मैं तुम से कहता हूं, मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो और तुम पाओगे; खटखटाओ और तुम्हारे लिए दरवाजा खोल दिया जाएगा। और उन्होंने इस उपदेश को तीन गुना वादे के साथ जोड़ा। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है; जो खोजता है वह पाता है; और जो खटखटाएगा उसके लिये द्वार खोला जाएगा। (लूका ११:९-१०)

फिर अनुभव पर आधारित तीन गुना चित्रण। तुम में से कौन सा पिता है, यदि तुम्हारा बेटा रोटी मांगे, तो उसे पत्थर देगा? या यदि वह मछली मांगे, तो क्या वह उसे सांप दे देगा? या यदि वह अण्डा माँगेगा, तो उसे बिच्छू देगा? मसीहा ने कहा कि चूँकि एक मानवीय पिता अपने बच्चों की ज़रूरतों का तुरंत जवाब देता है, परमेश्वर पिता उन विश्वासियों की ज़रूरतों का जवाब देगा जो उसके सामने अपनी प्रार्थनाएँ प्रस्तुत करते हैं। सो यदि तुम बुरे होकर भी अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा (लूका ११:११-१३)!

इफिसियों ५:१८ यीशु के अनुयायियों को आत्मा से परिपूर्ण होते रहने का आदेश देता है। रुआच हाकोडेश पहली बार विश्वासियों पर तब आया जब वे मसीह के स्वयं के वादे के जवाब में लगातार प्रार्थना कर रहे थे (प्रेरितों १:४-५ और २:४), (यहाँ, लूका २४:४९ और प्रेरितों १:८)। जो पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं (ग्रीक शब्द ईवी की एक विस्तृत अर्थ सीमा है और इसका अनुवाद पवित्र आत्मा के साथ, अंदर या द्वारा किया जा सकता है) वे उपहार प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं (रोमियों १२:६-८; प्रथम कुरिन्थियों १२:२८-३०; इफिसियों ४:११-१२), धार्मिकता के फल प्रदर्शित करें (गलातियों ५:२२-२३), और उन लोगों तक शब्द और कर्म के माध्यम से येशुआ की खुशखबरी

Gy – प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखाएं मती ६:९-१३ और लूका
११:१-१३ | 9

को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने की इच्छा, प्रेम और शक्ति रखें जिन्होंने अभी तक विश्वास नहीं किया है (पूरी पुस्तक) प्रेरितों का केंद्र इसी विषय पर है)। इसके अलावा, जिस किसी में मसीहा की आत्मा नहीं है वह उसका नहीं है (रोमियों ८:९ सीजेबी)।

पिता, इतनी आसानी से प्रार्थना छोड़ने के लिए हमें क्षमा करें। हमारी निष्ठाहीनता और रुचि की कमी को क्षमा करें। हम आपके प्रति वफादार बने रहने के लिए आपको धन्यवाद देते हैं, भले ही हम बेवफा हों। हमें ईमानदारी, लगातार और विश्वासपूर्वक प्रार्थना करना सिखाएं। सबसे महत्वपूर्ण बात, पिता, हमें अपने आदर्श पुत्र, यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलने में मदद करें।